

---

दिनांक 10-09-1975 की अव्यक्त वाणी  
पर आधारित मुरली कविता

---

नाँलेजफुल और पावरफुल आत्मा ही सक्सेसफुल  
व

महारथी वत्सों का अलौकिक मिलन

---

ज्ञान सागर शक्ति सागर जागती ज्योत कहलाते  
शिवबाबा अपने हर सेवाधारी बच्चे से बतियाते

पूछ रहे स्वयं को कितना ज्ञानमूर्त समझते हो  
कितना योगमूर्त सफलता मूर्त अनुभव करते हो

जितना खुद को ज्ञानमूर्त और योगमूर्त बनाओगे  
परिणाम स्वरूप सफलतामूर्त खुद को पाओगे

स्नेह और सहयोग सदा तुम सबको देते जाओ  
आज सफल होकर तुम भविष्य का फल पाओ

अलबेलेपन की नींद में कभी धोखा मत खाओ  
अज्ञान नींद छोड़कर जागती ज्योत बन जाओ

बाप समान खुद को थकावट से मुक्त बनाओ  
हर प्रकार की नींद में सोने से खुद को बचाओ

बाप की याद में पूरा ही अपने आपको समाओ  
बाप के प्यार में लीन होकर महारथी कहलाओ

अपने और बाप के गुणों में एक समानता लाओ  
बाप के और अपने बीच का हर अन्तर मिटाओ

संकल्प और नजर से खुद को वरदानी बनाओ  
बाप की समीपता का सहज ही अनुभव पाओ

बाप समान अपने हर संकल्प को शुद्ध बनाओ  
शुद्ध संकल्पों के द्वारा मनसा सेवा करते जाओ

---